ज्ञानविविधा
रचना, आलोचना और शोध की त्रैमासिक पत्रिका

**Online ISSN : 3048-4537**
July-September 2024 : 1(4)37-41
©2024 Gyanvividha
www.gyanvividha.com

**रीतिका उत्तम**
शोधार्थी,
**डॉक्टर माधवी**
शोध निर्देशिका,
स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा, बिहार

Corresponding Author :

**रीतिका उत्तम**
शोधार्थी,
**डॉक्टर माधवी**
शोध निर्देशिका,
स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा, बिहार

# हिन्दी उपन्यासों में नारी चित्रण

हिंदी साहित्य के क्षेत्र में आधुनिक काल के अंतर्गत अनेक गद्य विधाओं का विकास देखने को मिलता है। जिस प्रकार कविता, कहानी, नाटक, यात्रा-वृतांत, संस्मरण, रेखाचित्र इत्यादि विधाओं का विकास आधुनिक काल में हुआ उसी प्रकार उपन्यास विधा का उद्भव एवं विकास भी इसी युग में हुआ। 'उपन्यास' 'उप्' तथा 'न्यास' शब्दों के मेल से बना है। 'उप्' अर्थात् निकट और 'न्यास' अर्थात् रचना करना। अर्थात् 'उपन्यास' वह वस्तु है जो किसी निकट या सामने घटित घटना के आधार पर की गई रचना है। साहित्य की सबसे लोकप्रिय विधा उपन्यास ही है। उपन्यास में वे सभी गुण मौजूद हैं जो उसे पाठकों के मन में उत्साह से पढ़ने हेतु प्रेरित करती है। रामदरश मिश्र के अनुसार- "उपन्यास का स्वरूप इतना शक्तिशाली इसलिए है कि उसमें साहित्य की सारी विधाओं की छवियों को सन्निहित कर लेने की शक्ति है। उपन्यास में कथा तो है ही, साथ-ही-साथ अवसर-अवसर पर वह काव्य की-सी भावुकता और संवेदना जगाकर पाठकों को अपने में तल्लीन करता है, प्रकृति और प्रकृत्येतर दृश्यों और रूपों की योजना का सौन्दर्य जगाता है।"[1]

अन्य विधाओं की भाँति उपन्यास विधा भी पश्चिम की देन है परंतु यह प्रत्यक्ष रूप से पश्चिम की देन नहीं है क्योंकि उपन्यास का विकास अंग्रेजी से बांग्ला,बांग्ला से हिंदी में हुआ है। रामचंद्र शुक्ल ने कहा है – **"नाटकों और निबंधों की ओर विशेष झुकाव रहने पर बंगभाषा की देखादेखी नये ढंग के उपन्यासों की ओर भी ध्यान जा चुका था।"[2]**

इस बात में पूरी सच्चाई है कि 'साहित्य समाज का दर्पण' होता है। समाज में जो भी घटनाएं घटित होती है उसका असर प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से साहित्य में देखने को मिलता है। कहा जाता है कि समाज रूपी गाड़ी के दो पहिए- स्त्री एवं पुरुष हैं। यदि गाड़ी को सही ढंग से चलाना है तो दोनों पहियों को बराबर एवं ठीक रखना बहुत जरूरी है। यदि एक पहिए में भी गड़बड़ी आती है तो दुर्घटना होना संभव है। कहने का तात्पर्य यह है कि समाज में स्त्री एवं पुरुष दोनों को बराबर समझना चाहिए।यदि एक की स्थिति में भी गिरावट आती है तो समाज का संतुलन बिगड़ सकता है। परंतु बहुत अफसोस के साथ यह कहना पड़ रहा है कि इस पितृसत्तात्मक समाज में स्त्री की दशा दयनीय है। स्त्री को पुरुषों के समान न अधिकार

प्राप्त है और न सम्मान। स्त्री को हेय दृष्टि से देखा जाता है। उस पर अत्याचार,शोषण किया जाता है।समाज के इन सभी घटनाओं को आधार बनाकर ही साहित्य में रचा जाता है। जब उपन्यास विधा का विकास साहित्य में हो रहा था उस समय भी स्त्रियों के स्थिति में काफी गिरावट देखने को मिलती है यदि हम प्रेमचंद पूर्व युग की बात करें तो उस समय केवल मनोरंजन एवं उपदेशपरक उपन्यास लिखे जा रहे थे जिसके केंद्र में स्त्री थी। हिंदी साहित्य में उपन्यास विधा का सफल विकास प्रेमचंद युग में देखने को मिलता है जहां स्त्री को आदर्श के रूप में माना जाता है। प्रेमचंदोत्तर युग में स्त्री की स्थिति में काफी सुधार देखने को मिलता है।

प्रेमचंद पूर्व युग में सामाजिक,ऐतिहासिक, तिलस्मी- ऐयारी एवं जासूसी उपन्यास लिखे गए। सामाजिक उपन्यास लिखने में किशोरीलाल गोस्वामी का नाम प्रमुख रूप से लिया जाता है। उनके उपन्यासों में स्वच्छंद प्रेम का वर्णन रोमांचकारी ढंग से प्रस्तुत किया गया है। 'स्वर्गीय कुसुम' की 'कुसुम', 'लावण्यमयी' की 'लावण्य', 'आदर्श-स्त्री' की 'लीलावती', 'तरुण तपस्विनी' की 'चपला' और 'सौदामिनी', 'अंगूठी की नगीना' की 'लक्खी' एवं 'प्रणयिनी परिणय' की 'प्रणयिनी' जो सती साध्वी एवं आदर्श पतिता हैं । पंडित गौरी दत्त कृत 'देवरानी जेठानी की कहानी' में स्त्री शिक्षा पर बल दिया गया है। देवरानी 'ज्ञानो' और जेठानी 'आनंदी' के माध्यम से दिखाया गया एक शिक्षित और अशिक्षित स्त्री में क्या-क्या गुण और दोष पाए जाते हैं।अंबिका दत्त व्यास कृत 'आश्चर्य वृत्तांत' में स्त्री के कमनीय सौंदर्य का वर्णन करने वालों पर करारा व्यंग्य करते हुए कहते हैं- **"**लोग नायिकाओं के मुंह को कमल-सा मानते है। पर मुझे कवियों की समझ पर हँसी आती थी कि उनमें कमल जैसा क्या आकार देखा। छिःछिः**!**कवि लोगों के कहने के अनुसार एक ऐसी मूर्ति बनाई जाए जिसमें मुँह के स्थान में चाँद या कमल लिखा जाये और आँखों के ठिकाने दो मछली और आँखों के कोनों के बदले दो चोखे तीर बना दिए जायें**,** त्योंही कान के ठिकाने सीप**,** गले के बदले कबूतर**,** छाती के स्थान पर हाथी का सिर बना दिया जाय**,** चोटी के ठिकाने मोटी-सी काली-नागिन**,** दोनों बांह कमल की नल**,** हाथ कमल**,** कमर के स्थान एकदम खाली छोड़ दे और यों ही कमर के नीचे भी अपना जोर लगाते चले जायें। हम आप लोगों से पूछते हैं**,** कहिये तो यह कैसी डरावनी राक्षसी जैसी मुख तैयार होगी।**"**[3]

ऐतिहासिक उपन्यासों में किशोरीलाल गोस्वामी कृत 'हृदयहारिणी' की 'कुसुम','लवंगलता' के 'लवंगलता' और 'नगीना', 'सोने की राख' की 'पद्मिनी' इत्यादि उच्च चरित्रवान स्त्रियां हैं। इन सभी पात्रों पर रीतिकालीन नायिकाओं का प्रभाव देखने को मिलता है। अधिकतर स्त्री पात्र का अपना कोई प्रधान व्यक्तित्व नहीं है। वह केवल वासनामयी स्त्री के रूप में गढ़ी गई हैं । गंगाप्रसाद कृत 'जयमल' की 'कृष्णकांता' देशभक्ति के रूप में वर्णित है। मिश्रबंधु कृति वीरमणि और पुष्यमित्र' की नारियों का व्यक्तित्व भी दबा हुआ ही नजर आता है। तिलस्मी- ऐयारी उपन्यास लिखने में देवकीनंदन खत्री का नाम प्रमुख है। यहाँ लेखक ने दो प्रकार की स्त्रियों का जिक्र किया है- पहली सती साध्वी वीरांगना स्त्री का,जिसमें 'कुसुमकुमारी' की 'कुसुम', 'भूतनाथ' की 'मालती', 'इंदुमती', 'शांति' और 'सरस्वती', 'चंद्रकांता' की 'चंद्रकांता', 'चंद्रकांता संतति' की 'किशोरी', 'कामिनी', 'कमला' इसी प्रकार की स्त्री पात्र हैं । यह सभी नारियाँ बहुत ही सरल-कोमल हृदय वाली पात्र हैं । दूसरे रूप की नारी कुलटा, चरित्रहीन इत्यादि हैं। जासूसी उपन्यासों में गोपालराम गहमरी ने अपने उपन्यासों में स्त्री के चरित्र चित्रण पर विशेष काम न करके केवल अपने जासूसी उपन्यासों के विकास हेतु नारी पात्र का सहारा लिया है। अतः कहा जा सकता है कि इस युग के उपन्यासकारों ने स्त्री के व्यक्तित्व पर ध्यान न देते हुए केवल उसके श्रृंगार पर अधिक बल दिया है। स्त्री के मानवीय रूप का चित्रण न के बराबर देखने को मिलता है। स्त्री को केवल प्रेमिका,आदर्श पत्नी, बहू, माँ, बेटी के रूप में ही दिखाया गया है। इस युग में स्त्री को दुर्बल, व्यक्तित्व- विहीन दिखाया गया है। उनके सामने जीवन जीने की न कोई ठोस लक्ष्य है न कोई उद्देश्य। वह केवल रीतिकालीन प्रभाव से चित्रित की गई है स्त्री पात्र है। आगे चलकर प्रेमचंद के माध्यम से नारी का सशक्त चरित्र चित्रण हुआ है।

प्रेमचंद को उपन्यास सम्राट की संज्ञा दी गई है सही मायने में उपन्यास का सफल विकास प्रेमचंद युग में प्रेमचंद के माध्यम से ही हुआ है। प्रेमचंद उपन्यास को मानव के केंद्र में रखते हुए स्वयं कहते हैं कि- **"**मैं उपन्यास को मानव-चरित्र का चित्र-मात्र समझता हूँ।

मानव-चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्त्व है।"[4] कहा जाता है कि प्रेमचंद ऐसे लेखक थे जिन्होंने संपन्न व्यक्ति पर उपन्यास न लिखते हुए ग्रामीण जीवन को आधार बनाकर अधिक रचनाएँ लिखे हैं। त्रिभुवन सिंह के अनुसार- "प्रेमचन्द उन उपन्यासकारों में सर्व प्रथम रहे, जिनकी दृष्टि महलों की ओर न जाकर सबसे पहले झोपड़ियों की ओर गई। जिन्होंने टूटी-फूटी झोपड़ियों में पुआलों पर पड़ी तड़पती हुई भारतीय आत्माएं देखी। फटे चीथड़े में स्वाभाविक यौवन के सौष्ठव का अनुभव किया और दरिद्र दीन-जनों में भी महलों-सी प्रेम की पीर पायी।"[5]

प्रेमचंद पहले ऐसे उपन्यासकार थे जिन्होंने यथार्थवादी उपन्यास में यथार्थ को सही मायने में समझा और उसका वर्णन भी बखूबी ढंग से किया।प्रेमचंद कृत 'सेवासदन' की 'सुमन' वैश्य जीवन की समस्या का उद्घाटन करती है।'प्रेमा' की 'प्रेमा' विधवा विवाह की समस्या से जूझती स्त्री है।'वरदान' में प्रेम विवाह की समस्या का चित्रण हुआ है।'रंगभूमि' की 'सोफिया' के माध्यम से देश प्रेम दिखाया गया है।'निर्मला' की 'निर्मला' के माध्यम से दहेज प्रथा के कुप्रभाव एवं अनमेल विवाह की समस्या का अंकन किया गया है।'कायाकल्प' की 'मनोरमा' के माध्यम से चक्रधर के प्रति अनन्य प्रेम का चित्रण है।'कर्मभूमि' की 'सुखदा' एक साहसी, कर्मठ और राजनीतिक स्त्री के रूप में चित्रित है।'गोदान' की 'मालती' पर पाश्चात्य शिक्षा का प्रभाव जल्द ही समाप्त हो जाता है और वह भारतीय आदर्शों पर चलते हुए समाज-सेवा में अपना जीवन व्यतीत करती हुई नजर आती है। 'गोदान' की 'धनिया' एक निम्न जाति के स्त्री के साथ बड़े स्नेह और आदर से उसका स्वागत अपने परिवार में करती है जिसे गाँव वाले प्रताड़ित करते हैं और गाँव से बहिष्कार की बातें करते हैं।गोपाल राय के शब्दों में- "धनिया सिलिया को अपने घर में बड़े स्नेह से रखती है। जिस समाज में चमार का स्पर्श भी वर्जित हो वहाँ उस जाति की स्त्री को अपने घर में मेहमान की तरह रखना हिम्मत का काम है। धनिया की स्नेह और शरणागत-रक्षा की भावना किसी भी बन्धन को स्वीकार नहीं करती।"[6]

विशम्भरनाथ शर्मा कौशिक कृत 'भिखारीणि' की 'जस्सो' के माध्यम से अंतर्जातीय विवाह से उत्पन्न समस्या को दिखाया गया है।पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' कृत 'जी जी जी' में हिंदू समाज की स्त्री-पीड़ा की कथा का अंकन किया गया है।चतुरसेन शास्त्री कृत 'अमर अभिलाष' में विधवाओं पर हो रहे अत्याचार का चित्रण है। प्रतापनारायण श्रीवास्तव कृत 'विजय' में बाल विधवा की समस्या का चित्रण हुआ है। प्रेमचंद पूर्व युग में स्त्री का व्यक्तित्व बिगड़ा हुआ था परंतु प्रेमचंद युग में स्त्री का अपना व्यक्तित्व नजर आता है।प्रेमचंद पूर्व युग में वह प्रेमिका के रूप में गढ़ी गई थी परंतु प्रेमचंद युग में वह घर की चारदिवारी को तोड़कर खुलकर सांस लेती दिखाई पड़ती है। स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेते हुए अपने देश के लिए आत्म बलिदान की भावना इस युग की स्त्रियों में दिखाई पड़ता है। इस युग की स्त्रियाँ समाज में उत्पन्न अंधविश्वास, रूढ़ियों, कुरीतियों जैसी समस्याओं के खिलाफ लड़ती दिखाई देती हैं।बिंदु अग्रवाल के शब्दों में- "वे नारी की निहित शक्ति को उपन्यासों के माध्यम से प्रत्यक्ष करना चाहते थे। वे चाहते थे कि भारतीय नारी पुरुष के समान ही देश-भक्त बने, उसकी सामाजिक और राजनैतिक चेतना एवं उसमें अपने अधिकारों के लिए संघर्ष की भावना विकसित हो। अपने ऊपर किए गये अत्याचारों को वह मूक हो करके सहन न करती जाये प्रत्युत उनके विरुद्ध सक्रिय रूप से युद्ध करे। उनके मत में नारी के मन, बुद्धि और व्यक्तित्व के विकास का यही सर्वोत्तम मार्ग था। इसीलिए इस युग के अनेक उपन्यासों में विभिन्न प्रकार से नारी-जागरण का चित्रण किया गया है।"[7] इसका विस्तारित रूप प्रेमचंदोत्तर युग में देखने को मिलता है।

प्रेमचंद युग में उपन्यासकारों ने नारी की सामाजिक समस्याओं का चित्रण ही अधिक मात्रा में किये हैं परंतु प्रेमचंदोत्तर युग में फ्रायड, एडलर, युंग आदि मनोविश्लेषणवादियों के प्रभाव से नारी- मन की मनोवैज्ञानिक समस्या को मुख्य रूप से सामने रखा है। इस युग में लेखक ने स्त्री- मन की उलझन, स्त्री- पुरुष की काम भावना से संबंधित समस्या को देखने- समझने का प्रयास किया गया। स्त्री के वैयक्तिक और आर्थिक स्वतंत्रता को जितना अधिक समर्थन इस युग के उपन्यासकारों के किया उतना पूर्ववर्ती उपन्यासकारों ने नहीं किया है। इस युग में मनोविश्लेषणवादी, सामाजिक, राजनीतिक, आंचलिक एवं ऐतिहासिक उपन्यास लिखे गए। मनोवैज्ञानिक उपन्यास

लिखने वालों में जैनेन्द्र कुमार, इलाचंद्र जोशी,अज्ञेय, देवराज आदि का नाम मुख्य रूप से लिया जाता है। जैनेन्द्र कृत 'परख' की 'कट्टो' के माध्यम से विधवा- विवाह का समर्थन किया गया है। 'सुनीता' की 'सुनीता', 'श्रीकांत' और 'हरिप्रसन्न' के मनाभावों का चित्रण है। 'त्यागपत्र' की 'मृणाल' के माध्यम से स्त्री के विद्रोही व्यक्तित्व का चित्रण किया गया है। 'कल्याणी' की 'कल्याणी' के माध्यम से विवाह के उपरांत की समस्या का जिक्र है। 'सुखदा' की 'सुखदा' के मनोभावों का चित्रण किया गया है। 'दशार्क' में विवाह- विच्छेद के बाद स्त्री- जीवन की विडंबना का चित्रण है।इलाचंद्र जोशी कृत 'घृणामयी' में एक युवती के पश्चताप की कहानी का अंकन किया गया है। 'निर्वासित' में 'निलिमा' व 'महीप' के प्रेम का चित्रण है। 'पर्दे की रानी' की 'निरंजना' के माध्यम से वैश्यावृत्ति की समस्या के मनोवैज्ञानिक पक्ष का चित्रण मिलता है।अज्ञेय कृत 'शेखर: एक जीवनी' में 'शशि' के माध्यम से समाज में पुरुष के लिए प्रगति का मार्ग प्रशस्त करती दिखाई पड़ती है- **"**स्त्री हमेशा से अपने को मिटाती आई है। ज्ञान सब उसमें संचित है,जैसे धरती में चेतन संचित है। पर बीज अंकुरित होता है, तो धरती को फोड़कर; घरती अपने-आप नहीं फूलती-फलती। मेरी भूल हो सकती है, पर मैं इसे अपमान नहीं समझती कि सम्पूर्णता की ओर पुरुष की प्रगति में स्त्री-माध्यम है और वही एक माध्यम है। धरती धरती ही है; पर वह भी समान सृष्टा है; क्या हुआ अगर उसके लिए सृजन पुलक और उन्माद नहीं, क्लेश और वेदना है?"[8]

'नदि के द्वीप' में 'रेखा', 'भुवन' और 'गौरा' की प्रेम कथा का वर्णन किया गया है।डॉ. देवराज कृत 'बाहर भीतर' में एक मध्यवर्गीय परिवार की स्त्री की यातनापूर्ण स्थिति का अंकन है। सामाजिक उपन्यासकार के अंतर्गत विष्णु प्रभाकर, उदयशंकर भट्ट, भगवतीचरण वर्मा आदि आते हैं।विष्णु प्रभाकर कृत 'तट के बंधन' में नारी मुक्ति का चित्रण है। 'अर्धनारीश्वर' में स्त्रियों के बलात्कार और यातना का चित्रण किया गया है। 'संकल्प' में एक परित्यक्ता स्त्री के मनोभावों का चित्रण किया गया है। उदयशंकर भट्ट कृत 'नये मोड़' में एक सुशिक्षित व आत्मनिर्भर स्त्री की विवशता का अंकन किया गया है। भगवतीचरण वर्मा कृत 'चित्रलेखा' की 'चित्रलेखा' के माध्यम से पाप और पुण्य के नैतिक प्रश्न का विश्लेषण किया गया है। 'रेखा' की 'रेखा' ने नारी के गहन अंतर्द्वंद्व का चित्रण किया है। ऐतिहासिक उपन्यासकार के अंतर्गत वृंदावनलाल वर्मा, राहुल सांकृत्यायन, चतुरसेन शास्त्री, रांगेय राघव,हजारीप्रसाद द्विवेदी आदि आते हैं। वृंदावनलाल वर्मा कृत 'झाँसी की रानी' में 'लक्ष्मीबाई' के माध्यम से देश के लिए प्रेम का चित्रण किया गया है। हजारीप्रसाद द्विवेदी कृत 'बाणभट्ट की आत्मकथा' की 'निपुणिका' के माध्यम से प्रेम के उदात्तीकरण का चित्रण किया गया है। 'पुनर्नवा' में वर्ण व्यवस्था और नारी शोषण का चित्रण किया गया है। फणीश्वरनाथ रेणु, नागर्जुन, रामदरश मिश्र आदि ने अधिकतर आंचलिक उपन्यास लिखे हैं। फणीश्वरनाथ 'रेणु' कृत 'मैला आंचल' में अंधविश्वास का बोलबाला है। इस उपन्यास में स्त्री का शोषण अनेक स्तर पर किया गया है चाहे वह यौन शोषण हो, अशिक्षित स्त्री की कहानी हो, विधवा स्त्री की यातना हो, छोटी बच्ची से बलात्कार हो, सभी चित्र देखने को मिलता है। पार्वती की माँ एक विधवा स्त्री है जिसे सामाजिक शोषण का सामना करना पड़ता है। उसके सभी परिवारवालों की मृत्यु हो चुकी है। उसका एकमात्र नाती गणेश है, जिसके बीमार होने पर चिचाय की माँ कहती है – **"**पार्वती की माँ डायन है! तीन कुल में एक को भी नहीं छोड़ा। सब को खा गई। पहले भतार को, इसके बाद देवर देवरानी, बेटा बेटी सब को खा गई। अब एक नाती है, उसको भी चबा रही है।"[9]

नागार्जुन कृत 'रतिनाथ की चाची' में एक ग्रामीण विधवा नारी की जीवन समस्या का वर्णन है। रामदरश मिश्र कृत 'बीच का समय' में अनमेल विवाह से स्त्री – पुरुष के तनाव की कहानी है। 'रात का सफर' में 'ऋतु' के माध्यम से समाज के घिसे- पिटे निमय को तोड़ती हुई स्त्री की कहानी है। 'बिना दरवाजे का मकान' की 'दीपा' के जीवन संघर्ष का चित्रण किया गया है। 'थकी हुई सुबह' की 'लक्ष्मी' के माध्यम से शिक्षा के लिए संघर्ष करती हुई एक नारी की कथा है। 'एक बचपन यह भी' में पुत्री के जन्म पर उसके दादा के माध्यम से नकारात्मक सोच और पिता के माध्यम से सकरात्मक सोच का चित्रण हुआ है- **"**विरेश्वर जी ने उस दिन छुट्टी ले ली और दुकान से मिठाईयाँ खरीद लाए, सबको खिलाने लगे। राम बहादुर जी से रहा नहीं गया। विरेश्वर जी को डांट कर बोले- 'तुम तो ऐसे खुश

हो रहे हो जैसे कन्या नहीं पुत्र जन्मा हो।'…. 'क्या फर्क पड़ता है बाबू जी, संतान तो संतान है चाहे लड़का हो या चाहे लड़की।"[10]

राजनीतिक उपन्यास लिखने वालों में यशपाल का नाम मुख्य रूप से आता है। यशपाल कृत 'दादा कामरेड' की 'शैलवाला' और 'यशोदा' देश की आजादी के लिए अपना बलिदान देने को तत्पर रहती है। 'शैल' के पिता और 'यशोदा' के पति दोनों ही कांग्रेस दल के पक्ष में हैं परंतु दोनों ही 'शैल' और 'यशोदा' को कांग्रेस से जुड़ने के लिए मना करते हैं।

स्त्री- शोषण के खिलाफ लड़ती स्त्री, रूढ़ीवादिता सोच, अंधविश्वास, संकीर्ण मानसिकता, स्त्री- जागरण हेतु आदि विषयों पर महिला उपन्यासकारों ने भी अपनी कुशल लेखनी के माध्यम से स्त्री में आत्म- जागृति का काम किया है।मन्नू भंडारी, उषा प्रियंवदा, प्रभा खेतान, कृष्णा सोबती, मैत्रेयी पुष्पा, मंजुल भगत आदि प्रमुख महिला उपन्यासकारों की श्रेणी में आतीं हैं। इनकी स्त्री- पात्र या तो परंपरवादी हैं या तो परंपरा का विरोध करते दिखाई पड़ती हैं। मंजुल भगत कृत 'अनारो' की 'अनारो', मैत्रेयी पुष्पा कृत 'इदन्नमम्' की 'बऊ', उषा प्रियंवदा कृत 'पचपन खम्भे लाल दीवारें' की 'सुषमा' आदि परंपरवादी स्त्री हैं जो सामाजिक एवं धार्मिक रूढ़ियों की जकड़ी स्त्री पात्र है। कृष्णा सोबती कृत 'दिलोदानिश' की 'कुटुंब प्यारी' ऐसी ही परंपरावादी स्त्री है जो अपने पति के विवाह पश्चात् अन्य स्त्री से संबंध होने के बावजूद पारिवारिक मर्यादा के बंधन में बंधी हुई है। दूसरी ओर कृष्णा सोबती कृत 'मित्रो मरजानी' की 'मित्रो', प्रभा खेतान कृत 'छिन्नमस्ता' की 'प्रिया', उषा प्रियंवदा कृत 'रुकोगी नहीं राधिका' की 'राधिका' आदि में पारंपरिक रूढ़ियों एवं बंधनों के प्रति विद्रोह का भाव देखने को मिलता है।

नारी और पुरुष समाज के दो पहलू हैं जो समाज को पूर्णता प्रदान करते हैं परंतु पितृसत्तात्मक समाज ने स्त्री पर अनेक प्रकार की पाबंदी लगाकर उसका अपना वजूद मिटाने का प्रयास किया है। उसे हर प्रकार से अपमानित, शोषित किया गया है। हिंदी उपन्यास के क्षेत्र में नारी को एक अलग प्रकार की दृष्टि से देखने का प्रयास किया है। पूर्व प्रेमचंद युग में नारी का अपना कोई व्यक्तित्व नहीं था परंतु प्रेमचंद युग में प्रेमचंद ने नारी- जीवन के ऊपर अनेक उपन्यास लिखकर उनके समस्याओं के साथ- साथ समाधान प्रस्तुत किये हैं। प्रेमचंदोत्तर युग में जैनेन्द्र के उपन्यास भी स्त्री को स्वतंत्र जीवन जीने के लिए उत्साहित करते हैं।हर समस्या का समाधान स्वयं ढूँढ़ने के लिए प्रेरित करते दिखाई पड़ते हैं। महिला उपन्यासकारों ने स्त्री की जागृति हेतु अहम् भूमिका निभाई है। नारी-जीवन के उत्थान हेतु हिंदी उपन्यासकारों का बहुत बड़ा योगदान रहा है।

संदर्भ ग्रंथ:-


1. मिश्र रामदरश, हिंदी उपन्यास: एक अंतर्यात्रा, राजकमल प्रकाशन, प्रा. लि., नई दिल्ली, दूसरी आवृत्ति, 2008, पृष्ठ सं. – 14
2. शुक्ल रामचंद्र, हिंदी साहित्य का इतिहास,श्री प्रकाशन, नई दिल्ली, नवीन संस्करण, पृष्ठ सं. – 307
3. होटकर डॉ. शैलजातुलजाराम, हिंदी उपन्यासों में नारी का चित्रण, नवभारत प्रकाशन, दिल्ली, प्र. सं., 2009, पृष्ठ सं. - 53
4. मिश्र रामदरश, हिंदी उपन्यास: एक अंतर्यात्रा, राजकमल प्रकाशन, प्रा. लि., नई दिल्ली, दूसरी आवृत्ति, 2008, पृष्ठ सं.- 30
5. होटकर डॉ. शैलजातुलजाराम, हिंदी उपन्यासों में नारी का चित्रण, नवभारत प्रकाशन, दिल्ली, प्र. सं., 2009, पृष्ठ सं. - 66
6. राय गोपाल, गोदान: नया परिप्रेक्ष्य, अनुपम प्रकाशन, पटना, संस्करण-2011, पृष्ठ सं- 142
7. अग्रवाल बिंदु, हिंदी उपन्यास में नारी- चित्रण, राधा कृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1968, पृष्ठ सं- 149
8. अज्ञेय, शेखर: एक जीवनी, भाग-2, मयूर पपेरबैक्स, नौएडा,दिल्ली, संस्कण,2009,पृष्ठ सं- 217
9. रेणु फणीश्वरनाथ, मैला आँचल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, आठवाँ संस्करण, बारहवीं आवृत्ति, 2007, पृष्ठ सं. – 96
10. मिश्र रामदरश, एक बचपन यह भी, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, 2017, पृष्ठ सं.- 27


.....